समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अप्रैल २०१५ • वर्ष ६६ • अंक ०३

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

महाराणा प्रताप जयंती (२१ मई २०१५)

"जब मनुष्य की तरह सम्मान से जीना असम्भव हो, तब हम मनुष्य की तरह सम्मान के साथ मर तो सकते हैं।"

रवीन्द्र जयन्ती (०९ मई २०१५)

"मनुष्य का जीवन एक महानदी की भाँति है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में राह बना लेती है।"

२२ अप्रैल २०१५ — राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के कोलकाता आगमन पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल के साथ उनसे मिलते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार; साथ में परिलक्षित हैं सम्मेलन की राजस्थान संपर्क समिति के चेयरमैन श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिवकुमार लोहिया एवं अन्य।

इस अंक में:

सम्पादकीय: भूमि अधिग्रहण अध्यादेश

अध्यक्षीय: नारी-शिक्षा हो पहली प्राथमिकता

प्रादेशिक अध्यक्षों के चुनाव

यशस्वी-अपराजित – महान प्रताप

अप्रतिम रवीन्द्रनाथ ठाकुर

बिहार, झारखण्ड और उत्कल के नये अध्यक्ष

श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला
निर्वाचित अध्यक्ष
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
निर्वाचित अध्यक्ष
झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल
निर्वाचित अध्यक्ष
उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतीय समिति की बैठक

१४ जून २०१५, राँची

आतिथ्य: झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

WONDER GROUP

wonder images

one city. one machine. one colour.

Wonder Images PVT. LTD.

Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.

We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)

Indoor & Outdoor SOLUTIONS

- Front-lit-flex
- Back-lit-flex
- Woven P/E
- Self Adhesive vinyl
- Building wrap
- One way vision
- Vehicle / fleet graphics
- Floor and wall graphics
- Reflective Signage
- Frosted vinyl
- Canvas
- Translite
- Photo realistic poster paper
- Mesh, Tyvek,Yupo

only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E

Hundreds of colours & media for Indoors

5 State-of-the-art printing machine

Eastern India's **Largest** Outdoor Printers.

Contact Us:

Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in

Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

समाज विकास

◆ अप्रैल २०१५ ◆ वर्ष ६६ ◆ अंक ०४ ◆ एक प्रति - ₹ १० ◆ वार्षिक - ₹ १००

अनुक्रमणिका

शीर्षक		*पृष्ठ संख्या*
चिट्ठी आयी है		४
अखिल भारतीय समिति के बैठक की सूचना		५
सम्पादकीय : भूमि अधिग्रहण अध्यादेश	– *सीताराम शर्मा*	७-८
अध्यक्षीय : नारी शिक्षा हो हमारी पहली प्राथमिकता	– *रामअवतार पोद्दार*	९
केन्द्रीय / प्रान्तीय समाचार		१०-१७
लेख : वैवाहिक कार्यक्रमों में मद्यपान	– *शिव कुमार लोहिया*	१८
महाराणा प्रताप जयन्ती : यशस्वी-अपराजित - महान प्रताप	– *डॉ. ओंकार सिंह राठौड़*	१९
महाराणा प्रताप जयन्ती : प्रतापी प्रताप	– *गणेश संकर विद्यार्थी*	२०
महाराणा प्रताप जयन्ती : महाराणा भारतीय चेतना के अविभाज्य अंग	– *आचार्य विष्णुकांत शास्त्री*	२०
महाराणा प्रताप जयन्ती : कवितायें		२१
रवीन्द्र जयन्ती : अप्रतिम रवीन्द्रनाथ ठाकुर	– *शिव कुमार लोहिया*	२३
लेख : मैं अगर रुक गया काफिला तो चले	– *भानीराम सुरेका*	२४-२५
लेख : पर उपदेश कुशल बहुतेरे	– *सन्त कुमार कसेरा*	२५
हनुमान जयन्ती : हनुमान स्तवन	– *पं. ताउ शेखावटी*	२६

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आयी है

सराहनीय कार्य प्रेरणास्रोत

"समाज विकास" में प्रकाशित मारवाड़ी समाज की विभिन्न सूचनाओं एवं प्रेरणा-भरे लेखों से बहुत लाभ मिल रहा है। समय-समय पर समाज के कुछ लोगों द्वारा किए गए सराहनीय कार्य दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनते रहते हैं। हमारे कुछ छोटे शहरों से भी कुछ लोग ऐसे सराहनीय कार्य करते हैं जिनको अपनी इस मूल्यवान पत्रिका में देकर हम अच्छे काम करने वालों का हौसला वढ़ा सकते हैं एवं दूसरों को प्रेरणा दे सकते हैं।

– मनोज जैन
महामंत्री, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
बलांगीर (ओडिशा)

'कन्सर्न' ही नहीं, कर्त्तव्य भी

समाज-विकास पत्रिका बराबर मिल रही है और सभी समसामयिक घटनाओं, कार्यक्रमों एवं समाज सुधार हेतु किये गए आप के सभी प्रयासों कार्यों को जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। समकालीन राजनैतिक घटनाओं की सचित्र जानकारी प्राप्त होती है। इतने दीर्घ समय से पत्रिका प्रकाशित होना निरन्तर आप, आपलोगों की टीम का, समाज के प्रति अपना 'कन्सर्न' ही नहीं बल्कि कर्त्तव्य दर्शाता है। आप सब को बधाई व शुभकामनायें!

– डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत
जोधपुर (राजस्थान)

सामग्री पठनीय

मार्च २०१५ का समाज विकास अंक पढ़ा, अच्छा लगा। आदरणीय जुगलकिशोरजी जैथलिया ने राजस्थान गठन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी, धन्यवाद। प्रिय शिवकुमार लोहिया ने डॉ. राममनोहर लोहिया के बारे में इतिहास के कई पन्ने खोल दिये। बातें ६५ वर्ष पुरानी हैं। आज के युवाओं को इस लेख को पढ़कर काफी जानकारी प्राप्त होगी। स्व. राममनोहर लोहिया हमारे समाज के गौरव थे। शिवकुमार लोहिया ने एक और लेख रिश्ते, परिवार और समाज पर लिखा है। इस लेख का एक-एक शब्द बड़ा बजनदार है। हमारे नैतिक मूल्यों, कर्त्तव्यों, हमारी आवश्यकताओं के साथ-साथ हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। मेरे अच्छे मित्र स्व. विश्वनाथजी लोहिया के आदर्शों पर प्रिय शिवकुमार ने अपने जीवन को आदर्श बनाया है। इस लेख को पढ़कर पाठकों को अच्छे स्तर का अनुभव होगा। समाज विकास आजकल अच्छी पठनीय सामग्री प्रस्तुत कर रहा है। सम्मेलन के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों से एक विशेष अनुरोध है कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को निर्मूल करने के ठोस प्रयास करने चाहिये। समाज की ओर से विवाह आदि अवसरों पर बाजा बजवाने की मनाही थी फिर भी आजकल लोग विवाहस्थल पर बाजा वालों को बुलाकर समाज के प्रतिबंध की अनदेखी कर रहे हैं इस दिशा में समाज को दिशा निर्देश देने की परम आवश्यकता है। समाज में बड़े सुधार की आवश्यकता है।

– वास्तुशास्त्री श्यामलाल जालान
कोलकाता

समाज विकास के सुधी पाठकों से सादर अनुरोध

जनवरी २०१५ के अंक से समाज विकास की प्रति भारतवर्ष में सम्मेलन के प्रत्येक सदस्य को भेजी जा रही है। इसकी प्राप्ति, एक से अधिक प्रतियों की प्राप्ति या नहीं प्राप्त होने की जानकारी देकर हमें सही एवं सटीक वितरण व्यवस्था बनाने में सहयोग देने की कृपा करें।

साथ ही, पत्रिका के संबंध में प्राप्त आपकी प्रतिक्रियाएँ इस सम्बन्ध में आपके मनोभावों को जानने का हमारे लिए एकमात्र साधन हैं। इनसे न सिर्फ संवाद बना रहता हैं बल्कि हमें पत्रिका के स्तर में सुधार एवं सामग्री-चयन से संबंधित निर्णय लेने में बहुत सहयोग मिलता है। यह कृपा बनायें रखें।

हमारे सम्पर्क सूत्र हैं :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड
कोलकाता - ७०० ००७
ई-मेल : aimf1935@gmail.com
फोन : (०३३) २२६८ ०३१९

– सम्पादक

Fax/Phone : +91-33-2268 0319 ESTD. 1935 E-mail : aimf1935@gmail.com

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. under W.B. Societies Act XXVI of 1961)
152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
१५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७०० ००७

प्रमुख उद्देश्य
समाज सुधार, समरसता,
राजनैतिक चेतना एवं राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय अध्यक्ष
रामअवतार पोद्दार
09830019281

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
प्रह्लादराय अग्रवाल
09830079111
रमेशचन्द गोपीकिशन बंग
09423101700
सुरेन्द्र लाठ
09437488822
श्याम सुन्दर हरलालका
09435042247
रमेश कुमार बंग
09848082765
विनय सरावगी
09431100311

राष्ट्रीय महामंत्री
शिव कुमार लोहिया
09830553456

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
गोपाल अग्रवाल
09331016950

राष्ट्रीय संगठन मंत्री
संजय कुमार हरलालका
09804154115

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
कैलाशपति तोदी
09830044079
अमित सरावगी
07631200000

प्रादेशिक शाखा सम्मेलन
बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उत्कल, पूर्वोत्तर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु एवं कर्नाटक

सम्मेलन भवन
25ए, राजा राममोहन राय सरणी
(अमहर्स्ट स्ट्रीट)
कोलकाता - 700 009
फोन : (033) 2350-9929

Contribution Exempted under 80G of I. TAX Act

अ.भा.मा.स./१९/१०१५-१६ *२७ अप्रैल २०१५*

अखिल भारतीय समिति के सभी सदस्यों की सेवा में

मान्यवर,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की आगामी बैठक ***रविवार, १४ जून २०१५ को दोपहर २:३० बजे, होटल होलीडे होम (चाँदनी चौक के निकट; दूरभाष: ०६५१-७१०७२००), कांके रोड, राँची*** *में, झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में, निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गयी है।*

बैठक में आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

भवदीय,

(शिव कुमार लोहिया)
राष्ट्रीय महामंत्री

विचारार्थ विषय:

१. गत बैठक का कार्यवृत्त (संलग्न) पारित करना।
२. अध्यक्षीय संबोधन।
३. महामंत्री की रपट।
४. कोषाध्यक्ष द्वारा आर्थिक स्थिति पर रपट।
५. राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति पर विचार-विमर्श।
६. भावी कार्यक्रमों पर विचार।
७. सत्र २०१६-१७ हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव संबंधी सभी आवश्यक निर्णय।
८. विविध - अध्यक्ष की अनुमति से।

विशेष नोट : बाहर से पहुँचने वाले माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपने आगमन एवं प्रस्थान संबंधी पूर्व सूचना ***श्री राज कुमार केडिया, अध्यक्ष - झारखंड सम्मेलन (मो. ९४७०१६२२००), श्री बसंत कुमार मित्तल, महामंत्री - झारखंड सम्मेलन (मो. ९४३१३९४३१८) या श्री किशोर मंत्री (मो. ९४३१११६२३२) एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया (मो. ९८३०५५३४५६)*** *को यथाशीघ्र देने की कृपा करें ताकि आवश्यकतानुसार स्वागत एवं निवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। कृपया समन्वय हेतु केन्द्रीय कार्यालय को भी अवश्य सूचित करें।*

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

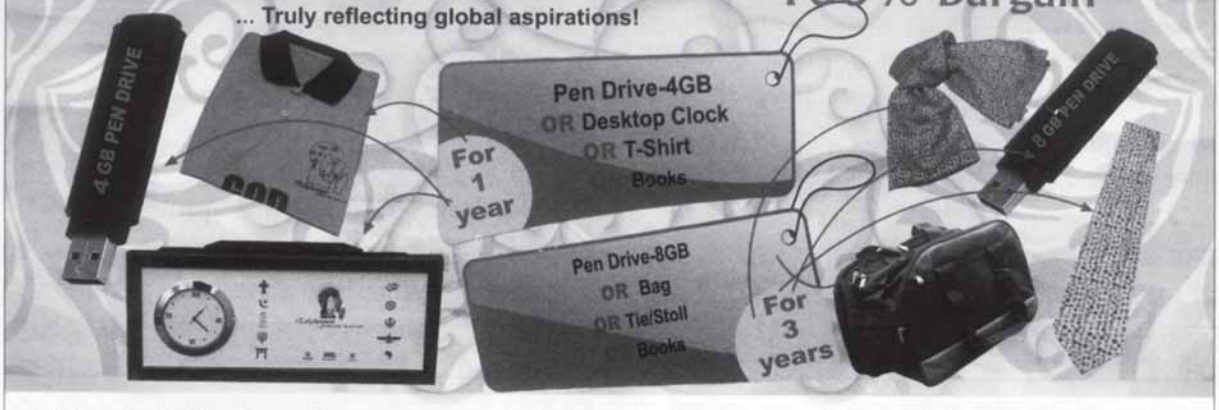

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics — Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

सम्पादकीय

भूमि अधिग्रहण अध्यादेश

मोदी सरकार के गले की फाँस

– सीताराम शर्मा

यह संभवतः पहली बार है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसी मुद्दे पर आगे बढ़ने के बाद पाँव खींच रहे हैं। भूमि अधिग्रहण अध्यादेश पर किसानों का गुस्सा उबाल पर है। संघ परिवार के कई संगठन भी इस प्रश्न पर आलोचक बनते दिखते हैं। कांग्रेस इस सवाल पर अपनी वापसी का रास्ता खोज रही है।

भूमि अधिग्रहण बिल – टेढ़ी खीर

भाजपा सांसदों को २३ अप्रैल २०१५ को किसानों की दुर्दशा विषय पर सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने यह प्रायः स्वीकार कर लिया कि संभवतः उनकी सरकार ने प्रत्येक विषय पर सही निर्णय नहीं लिया हो। **श्री मोदी ने कहा – "हम सभी को यह सोचना होगा कि क्या हमसे कुछ भूल हुयी है, पिछले १० महीनों में हमने कहाँ गलती की है।"** यह आम आदमी की रैली में एक किसान गजेन्द्र सिंह द्वारा आत्महत्या के दूसरे दिन की बात है।

भाजपा सरकार द्वारा लाया गया संशोधन अध्यादेश उस नए भूमि अधिग्रहण कानून के लिये है जो २९ सितम्बर २०१३ को बना और देश भर में एक जनवरी २०१४ से लागू हुआ। २०१३ के कांग्रेसी शासन में बने अधिग्रहण कानून ने १८९४ से चले आ रहे, १२० साल पुराने, औपनिवेशिक कानून को बदला था। एक साल पहले ही यह कानून भाजपा की सहमति से बना था। जिस संसदीय समिति ने इसे पारित किया उसकी अध्यक्ष भाजपा नेता सुमित्रा महाजन थीं और वह इन दिनों लोकसभा अध्यक्ष है। **गृहमंत्री राजनाथ सिंह और विदेशमंत्री सुषमा स्वराज इस कानून को बनाने में अगुवाई करते रहे। राजनाथ सिंह ने उस समय कहा था, "हम महसूस करते हैं कि यदि किसान कृषि भूमि के अधिग्रहण के खिलाफ है तो यह किसी भी सूरत में नहीं लिया जाये। सिंचित एवं उर्वर भूमि का अधिग्रहण किसी भी परिस्थिति में न हो। उसकी जगह बेकार या ऊसर जमीन को इस्तेमाल में लाया जाए।"**

सरकार का कहना है कि पुराने अधिग्रहण कानून में कई ऐसे प्रावधान थे, जिन्हें विकास को रफ्तार देने के लिये हटाना जरूरी था। सवाल उठता है कि जो कानून एक साल पहले भाजपा के लिये ठीक ही नहीं, आवश्यक था, वह इतनी जल्दी विकास की राह मे रोड़ा कैसे बन गया।

विपक्ष इस अध्यादेश को किसान विरोधी मानता है। पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री एवं कांग्रेसी नेता श्री जयराम रमेश कहते हैं – मोदी सरकार किसानों से अधिकार छीन रही है। हमने जो अधिकार जिलाधिकारियों से छीनकर जमीनमालिकों को दिये थे, उसे भाजपा ने फिर से जिलाधिकारियों को सौंप दिया।"

भाजपा के सहयोगी संगठन – भारतीय किसान संघ अथवा स्वदेशी जागरण मंच, भी इस अध्यादेश के कई प्रावधानों के विरुद्ध हैं। किसान संघ के महासचिव प्रभाकर केलकर का कहना है – "किसानों की बहुमत सहमति के बिना जमीन के अधिग्रहण का हम विरोध करते हैं। सरकार को धैर्य से काम लेना चाहिये। इतनी जल्दीबाजी क्या थी कि सरकार को अध्यादेश लाना पड़ा?" साथ ही स्वदेशी जागरण मंच, जो भारतीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्धित है, के राष्ट्रीय संयोजक श्री अरूण ओझा भी सरकार की आर्थिक

नीतियों पर यह कहकर प्रश्न उठा रहे हैं – सरकार औद्योगिक मॉडल से परे कुछ देख ही नहीं पा रही है। इसके चलते दीर्घ काल में प्रकृति के कोप का भागी बनना होगा।

२०१३ के कानून एवं २०१५ के अध्यादेश में मुख्य मुद्दा किसानों की मंजूरी का सवाल है। २०१३ के पारित कानून में, जिसे लोकसभा में उपस्थित २३५ में से २१६ सांसदों का समर्थन प्राप्त हुआ था, यह प्रावधान था कि "भूमि अधिग्रहण के लिये ७० प्रतिशत किसानों की मंजूरी अनिवार्य और प्राइवेट एवं पीपीपी मॉडल के तहत अधिग्रहण के लिये ८० प्रतिशत किसानों की मंजूरी अनिवार्य है।"

एक आँकड़े के मुताबिक देश में आठ करोड़ किसान हैं। ग्रामीण मजदूरों एवं गाँव के संसाधनों पर निर्भर करने वालों की संख्या २७ करोड़ है। इनके विषय मे दोनों कानून ही कोई बात नहीं करते। इतने बड़े तबके की आजीविका का सवाल दोनों कानूनों की प्राथमिकता के बाहर है।

जबकि २०१५ के अध्यादेश मे रक्षा, औद्योगिक कॉरीडोर, सस्ते मकान और निम्न वर्ग के लिये आवास, ग्रामीण क्षेत्रों के ठांचागत निर्माण और पीपीपी माडल के तहत सामाजिक विकास के लिये होने वाली ढांचागत परियोजनाओं के लिये जमीनमालिकों से सहमति लेने की जरूरत नहीं होगी। साथ ही साथ इन योजनाओं के सामाजिक प्रभाव का आकलन भी नहीं किया जायेगा। २०१३ के कानून में बहुफसली जमीन का अधिग्रहण पब्लिक या प्राईवेट किसी भी उपक्रम के लिये नहीं किये जाने का प्रावधान था, जबकि २०१५ के अध्यादेश में यह प्रावधान नहीं है।

विरोधियो के अनुसार यह अध्यादेश औद्योगिक मनमानी को बढ़ावा देगा और जमीन से जुड़े तबकों के लिये अहितकर होगा। दोनों कानून सिर्फ ग्रामीण इलाके के जमीनमालिकों के मुआवजे की ही पैरोकारी करते हैं। गाँवो मे रहने वाले अन्य तबकों की जीविका का क्या होगा? जमीन अधिग्रहण के बाद इनकी जीविका कैसे चलेगी? एक आँकड़े के मुताबिक देश में आठ करोड़ किसान हैं। ग्रामीण मजदूरों एवं गाँव के संसाधनों पर निर्भर करने वालों की संख्या २७ करोड़ है। इनके विषय मे दोनों कानून ही कोई बात नहीं करते। इतने बड़े तबके की आजीविका का सवाल दोनों कानूनों की प्राथमिकता के बाहर है। **किसी भी भूमि अधिग्रहण कानून में ऐसे प्रावधान होने चाहिये जो देश के आद्यौगिक विकास मे रोड़े न अटकाएँ एवं साथ-साथ किसान तथा जीविकोपार्जन हेतु कृषि पर आधारित तबकों के हितों की भी रक्षा करें।** ★★★

समाचार-सार

विश्व वात्सल्य मंच की काव्यगोष्ठी

लंदन से पधारी 'विश्वम्भरा' की प्रधान सचिव डॉ. कविता वाचकनवी के सम्मान में विश्व वात्सल्य मंच, हैदराबाद द्वारा २० अप्रैल २०१५ को स्थानीय श्रीकृष्ण मुरारका पैलेस में एक काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।

तस्वीर में बायें से दायें : विजयलक्ष्मी काबरा, सुषमा बैद, ऋषभदेव शर्मा, डॉ. अहिल्या मिश्र, डॉ. कविता वाचकनवी, संपत देवी मुरारका, विनीता शर्मा, सुनीता गुप्ता एवं राजेश मुरारका।

समारोह का शुभारम्भ श्रीमती संपत देवी मुरारका के सरस्वती-वंदना से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अहिल्या मिश्र ने स्वागत-भाषण दिया।

गोष्ठी में विजयलक्ष्मी काबरा, सुषमा वैद, विनीता शर्मा, डॉ. ऋषभदेव शर्मा, सुनीता गुप्ता, संपत देवी मुरारका, डॉ. अहिल्या मिश्र एवं कविता वाचकनवी ने काव्यपाठ किया। संचालन सुषमा वैद ने किया। अंत में गीता अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया। ★★★

अध्यक्षीय

नारी-शिक्षा हो हमारी पहली प्राथमिकता

– रामअवतार पोद्दार

मातृशक्ति, युवाशक्ति, भाइयों,
राम-राम, राधे-राधे!

आज एक ज्वलंत प्रश्न जो हमारे समाज और देश के सामने है वह है हमारी आधी आबादी, महिलाओं की स्थिति। आए दिन समाचार-पत्रों एवं दूरदर्शन के माध्यम से हम ऐसे समाचार पढ़ते-सुनते-देखते हैं जो हमें सोचने पर विवश कर देते हैं कि क्या हम अपनी बहू-बेटियों को परिवार एवं समाज में उनका यथोचित स्थान दे पा रहे हैं।

हमारी संस्कृति में आदिकाल से ही महिलाओं को शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में पुरुषों के समकक्ष अधिकार प्राप्त थे। ऋग्वेद एवं उपनिषदों में अनेकों विदुषी-मनीषी महिलाओं के दृष्टांत मिलते हैं। किन्तु मध्यकालीन भारत में परिस्थितियाँ बदलीं। तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक माहौल (उदाहरणार्थ पर्दा-प्रथा) के कारण नारी-शिक्षा के क्षेत्र में गंभीर अवनति हुयी। ब्रिटिश-काल में पुनः संस्थागत शिक्षण की नींव डाली गयी, स्वातंत्र्योत्तर भारत में इसे गति मिली किन्तु हमारी सामाजिक-धार्मिक अवस्था एवं सोच इसमें बाधाएँ डालती रही। हम अब भी इस क्षेत्र में इच्छित सफलता नहीं पा सके हैं।

आँकड़ों के अनुसार भारत में नारी साक्षरता की दर ग्रामीण इलाकों में करीब ३५ प्रतिशत एवं शहरी इलाकों में करीब ६५ प्रतिशत है। आज की वैश्विक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में यह चिन्ता का विषय है। साक्षरता की कमी न सिर्फ शिक्षा-वंचित महिलाओं के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है वरन् उनके परिवारों और राष्ट्र के विकास में भी बाधक है। इसके अतिरिक्त किसी महिला का अशिक्षित होना उसके खुद के स्वास्थ्य एवं सामाजिक स्तर तथा उसके बच्चों के सर्वांगीण विकास में भी एक बड़ी बाधा है।

अपने स्थापना काल से ही अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने इस विडम्बना का संज्ञान लिया है और इस क्षेत्र में कदम उठाए हैं। नारी-शिक्षा के समर्थन में एवं इसमें बाधक पर्दा-प्रथा के खिलाफ सम्मेलन ने सुनियोजित आंदोलन किया एवं उल्लेखनीय सफलता भी पायी। आज भी हम अपने केन्द्रीय शिक्षा कोष एवं विभिन्न प्रांतीय शाखाओं के योजनाओं के माध्यम से इस क्षेत्र में प्रयासरत हैं। तथापि, हमें यह स्वीकार करना होगा कि इस महती समस्या का समाधान किसी संस्था या सरकार के आगे आने से ही नहीं

शिक्षा इनका अधिकार है!

हो सकता। इसके लिए सरकार, गैर-सरकारी संस्थाओं और इनसे भी महत्वपूर्ण परिवार स्तर से पूरे मनोयोग से, प्राण-पण से प्रयास की जरुरत है।

न सिर्फ अपने बेटियों-बहुओं के सामाजिक/आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए वरन् अपने आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी यह आवश्यक है कि हमारी महिलाएँ साक्षर-शिक्षित हों। **अर्जेन्टीना के विश्वप्रसिद्ध अर्थशास्त्री मैनुअल बेलग्रानो के अनुसार, "ऐन इग्नोरेंट वुमैन रेजेज अनेबल, रिटार्डेड सिटिजन"। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के शब्दों में "स्त्री 'सामान' नहीं; सम्मान की हकदार है।" उनको परिवार एवं समाज में यह 'सम्मान' हम तभी दिला पायेंगे जब वे शिक्षित हों।**

शिक्षित नारियाँ अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए एक वरदान हैं। मैं सम्मेलन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति से यह अनुरोध करता हूँ कि हर स्तर से इस विषय में यथासंभव सक्रिय सहयोग दें। शुभकामनाओं सहित...

जय समाज, जय राष्ट्र! ★★★

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के चुनाव

निर्मल कुमार झुनझुनवाला बिहार सम्मेलन के नये अध्यक्ष निर्वाचित

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सत्र २०१५-१६ के लिए अध्यक्ष पद का चुनाव प्रमण्डलीय स्तर पर ११ फरवरी २०१५ से २१ फरवरी २०१५ के बीच कराया गया। २२ फरवरी २०१५ को आयोजित प्रादेशिक सभा में चुनाव परिणाम की घोषणा की गयी। कुल पड़े ७२६ मतों में से ६५६ मत प्राप्त कर श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला निर्वाचित घोषित किये गये।

उल्लेखनीय है कि कुल छह प्रत्याशियों ने अध्यक्ष पद हेतु नामांकन किया था जिनमें से चार ने बाद में अपने नाम वापस ले लिए थे। मुकाबला बचे हुए दो उम्मीदवारों श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला एवं श्री शिवहरि अग्रवाल के बीच था। चुनाव हेतु श्री राजेश सिकारिया चुनाव अधिकारी एवं श्री ओम प्रकाश टिबड़ेवाल सदस्य थे।

निर्मल कुमार झुनझुननाला : संक्षिप्त परिचय

सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं कर्मठ व्यवसायी श्री विश्वनाथ श्री झुनझुनवाला के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला का जन्म २१ मई १९५१ को भागलपुर में हुआ। इनकी शिक्षा-दीक्षा (एम.कॉम., एल.एल.बी.) वहीं रहकर सम्पन्न हुई।

यथा नाम तथा गुणों से अलंकृत श्री निर्मल कुमार जी ने उच्च शैक्षणिक योग्यता प्राप्त कर पारिवारिक व्यावसाय को आगे बढ़ाते हुए, परिवार से धरोहर के रूप में प्राप्त समाजसेवा, संतसेवा जैसे अनेक कार्यों में सम्मिलित होकर कई संस्थाओं में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता निभाई।

१० मई १९७३ को आपने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया। व्यवसाय को आगे बढ़ाने हेतु आप सन् १९८७ में पटना आये। सेवा की बलवती भावना ने आपको विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय बना दिया। अपने मृदुभाषी, निर्मल स्वभाव, कर्मठता एवं समर्पण से आपने अनेकों सामाजिक संगठनों को नई दिशा दी।

निर्मल कु. झुनझुनवाला

आप :

- बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना नगर शाखा में २००१ से २००६ तक कोषाध्यक्ष, २००६ से २०१० तक अध्यक्ष एवं वर्त्तमान में संरक्षक हैं।
- बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन में २००९ से २०११ तक संगठन मंत्री, २०११ से २०१३ तक कार्यकारिणी सदस्य एवं उपाध्यक्ष मुख्यालय और वर्त्तमान सत्र २०१३-१५ में कार्यकारिणी समिति सदस्य के रूप में सेवा दी।
- आध्यात्मिक सत्संग समिति में २००८ से २०१० एवं २०१२ से १४ में कार्यकारिणी समिति सदस्य एवं २०१०-१२ में संयुक्त सचिव तथा वर्तमान में महामंत्री का दायित्व निभा रहे है।
- बिहार मारवाड़ी शिक्षा समिति में २००१-२००२ में संयुक्त मंत्री एवं २०१०-२०१३ में ट्रस्टी के पद पर कार्य किया।
- बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज में २००६-२००८, २००९-२०१० के लिए कार्यकारिणी समिति सदस्य एवं २०१०-१२ में ट्रेड सब कमिटि के चेयरमैन रहे।
- २००१-२००२ में क्षेत्रीय रेल उपयोगिता परामर्श दात्री समिति सदस्य के रूप में काम किया।

समाचार-सार

कमला गोइन्का फाउण्डेशन विभिन्न साहित्यिक पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

१. मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार २०१५ - राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के संवर्द्धन एवं प्रचार-प्रसार हेतु, पुरस्कार राशि रु. १,११,१११/-

२. रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार - गत दस वर्षों में महिला साहित्यकारों द्वारा लिखित एवं प्रकाशित राजस्थानी भाषा की पुस्तकों एवं राजस्थानी साहित्य में समग्र योगदान के आधार पर, पुरस्कार राशि रु. ३१,०००/-

३. किशोर कल्पनाकांत युवा साहित्यकार पुरस्कार - ३५ वर्ष तक की आयु के युवा लेखकों को, जिनकी कोई पुस्तक प्रकाशित न हुई हो, प्रकाशनार्थ सहयोग व नगद पुरस्कार दिया जाता है।

उपर्युक्त पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ १५ जून २०१५ तक भेजने हैं। नियमावली व प्रस्ताव पत्र के लिए वेवसाईट www.kgfmumbai.com या इमेल mumbai@gogoindia.com पर संपर्क किया जा सकता है।

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया होंगे झारखण्ड सम्मेलन के नये अध्यक्ष

झारखण्ड सम्मेलन के प्रांतीय समिति की बैठक १२ अप्रैल २०१५ को राँची स्थित श्री दिगम्बर जैन भवन में आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया ने की।

बैठक में सत्र २०१५-१७ के लिए झारखण्ड प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष का चुनाव किया गया। चुनाव अधिकारी श्री रतनलाल बंका ने सूचना दी कि अध्यक्ष पद हेतु सर्वश्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया (राँची), दुर्गा प्रसाद अग्रवाल (हजारीबाग), धर्मचंद बजाज (राँची) और श्री प्रदीप बागला (देवघर) प्रत्याशी थे किन्तु नामांकन पत्र वैध न पाए जाने के कारण श्री बागला का नामांकन स्वीकार नहीं किया गया और चुनाव तीन प्रत्याशियों के बीच हुआ। कुल ३३५ वैध मतों में से श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने २३७ मत प्राप्त किए और उन्हें निर्वाचित घोषित किया गया।

इसके पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया ने प्रांत के विभिन्न हिस्सों से पधारे समाजबन्धुओं का स्वागत करते हुए। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग की सम्मेलन के प्रति बढ़ती रूचि सम्मेलन के भविष्य के लिए शुभ संकेत है।

बैठक को सम्बोधित करते प्रांतीय अध्यक्ष श्री राज कुमार केडिया।

उन्होंने नवनिर्वाचित आध्यक्ष को पूर्ण सहयोग देने की बात भी कही। प्रांतीय महामंत्री श्री बसंत कुमार मित्तल ने वर्तमान सत्र में झारखण्ड सम्मेलन के क्रियाकलापों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने अपने निर्वाचन पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सबको साथ लेकर 'कार्यालय, कार्यकर्ता, कार्यक्रम' के माध्यम से सम्मेलन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वे सदैव तत्पर रहेंगे।

बैठक में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रूँगटा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सरावगी, झारखण्ड सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया, पूर्व प्रांतीय अध्यक्षगण सर्वश्री गोविन्द प्रसाद डालमिया एवं भागचंद पोद्दार सहित प्रांत के प्रायः सभी जिलों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। धन्यवाद-ज्ञापन प्रांतीय महामंत्री श्री बसंत कुमार मित्तल ने किया।

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया का संक्षिप्त परिचय

झारखंड सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाडोदिया का जन्म २९ अक्तूबर १९४५ को राजस्थान राज्य के नागौर जिला अन्तर्गत लाडनू तहसील के लैडी ग्राम में सेठजी श्री रावतमलजी गाडोदिया के द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ। ये तीन भाई एवं चार बहन है। प्रारंभिक शिक्षा लैडी ग्राम में ही हुई। हाई स्कूल की परीक्षा सेठ जगन्नाथ तापडिया उच्च माध्यमिक विद्यालय जसवंतगढ से सर्वोच्च अंक प्राप्त कर किये एवं नेशनल मेरिट स्कालरशिप के साथ सेठ लादूराम तापडिया मेरिट स्कालरशिप भी प्राप्त की। बांगड़ कॉलेज डीडवाना से बी. कॉम. की डिग्री लेने के बाद १९६६ में कोलकाता आये एवं कोलकाता यूनिवर्सिटी के लॉ कॉलेज एवं आई.सी.डब्ल्यू.ए. में दाखिला लिया। बांगड़ कॉलेज में अध्ययन के समय श्री रंगनाथजी बांगड़ के संपर्क में आये एवं कोलकाता में बांगड़ ग्रुप की हेस्टिंग जूट मिल में काम भी शुरू किया। प्रातः लॉ कॉलेज, दिन में नौकरी एवं सायंकाल में आई.सी.डब्ल्यू.ए. का अध्ययन। अपरिहार्य कारणों से १९६८ में कोलकाता से राँची आकर व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे, संक्षिप्त विवरण निम्नवत :

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

- मारवाड़ी सहायक समिति के उपाध्यक्ष एवं मंत्री रहे।
- रांची में अग्रवाल सभा की स्थापना में सक्रिय योगदान

(शेष पृष्ठ १५ पर)

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के चुनाव

श्यामसुंदर अग्रवाल बने उत्कल सम्मेलन के नये अध्यक्ष

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की राज्य परिषद सभा की बैठक कांटाबाजी में १२ अप्रैल २०१५ को प्रांतीय अध्यक्ष के चुनाव हेतु प्रांतीय अध्यक्ष श्री नकुल अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित की गयी।

अध्यक्ष पद हेतु श्री श्यामसुंदर अग्रवाल एवं श्री सूर्यकांत सांगनेरिया उम्मीदवार थे। कुल १०४ सदस्यों ने मतदान किया, सभी मत वैध पाये गये। श्री अग्रवाल को ७७ एवं श्री सांगनेरिया को २७ मत मिले। तदनुसार श्री श्यामसुंदर अग्रवाल को निर्वाचित घोषित किया गया।

बैठक में प्रांतीय अध्यक्ष श्री नकुल अग्रवाल ने धार्मिक आयोजनों में फिजूलखर्ची रोकने तथा स्थायी सामाजिक प्रकल्पों के लिए प्रयास करने का निवेदन किया। प्रांतीय महामंत्री श्री मनोज जैन ने सचिव प्रतिवेदन एवं प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जैन ने सत्र के आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री संतोष पारीख ने संगठन के विषय पर चर्चा की एवं शिक्षा एवं समाज विकास के क्षेत्र में सम्मेलन द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री अशोक जालान ने शिक्षा विकास ट्रस्ट एवं ट्रस्ट से प्रदत्त सहायता के बारे में जानकारी दी। विभिन्न अंचलों से पधारे समाजबंधु दानदाताओं द्वारा इस ट्रस्ट हेतु करीब चार लाख रुपये की सहायता राशि की घोषणा भी हुई।

श्री जीतेन्द्र गुप्ता ने उत्कल सम्मेलन के संविधान में संशोधन के विषय में सभा को अवगत कराया। संक्षिप्त चर्चा के बाद प्रस्तावित संशोधनों को प्रांतीय सभा ने अनुमोदित किया।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री नकुल अग्रवाल (बायें) एवं निर्वाचित अध्यक्ष श्री श्यामसुंदर अग्रवाल।

बैठक में उत्कल सम्मेलन की मासिक पत्रिका झलक के नियमित प्रकाशन हेतु झलक प्रकाशन ट्रस्ट की विधिवत घोषणा एवं इससे संबंधित औपचारिकताएँ पूरी की गयी।

बैठक में प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री गौरीशंकर अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष (जयपुर) श्री दीनबंधु अग्रवाल, चुनाव अधिकारी श्री मगनलाल अग्रवाल, कांटाबाजी शाखाध्यक्ष श्री सुभाष अग्रवाल, स्वागताध्यक्ष श्री अशोक छापड़िया सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित थे। सभा का संचालन कांटाबाजी शाखा के सचिव श्री संजय अग्रवाल ने किया। ★★★

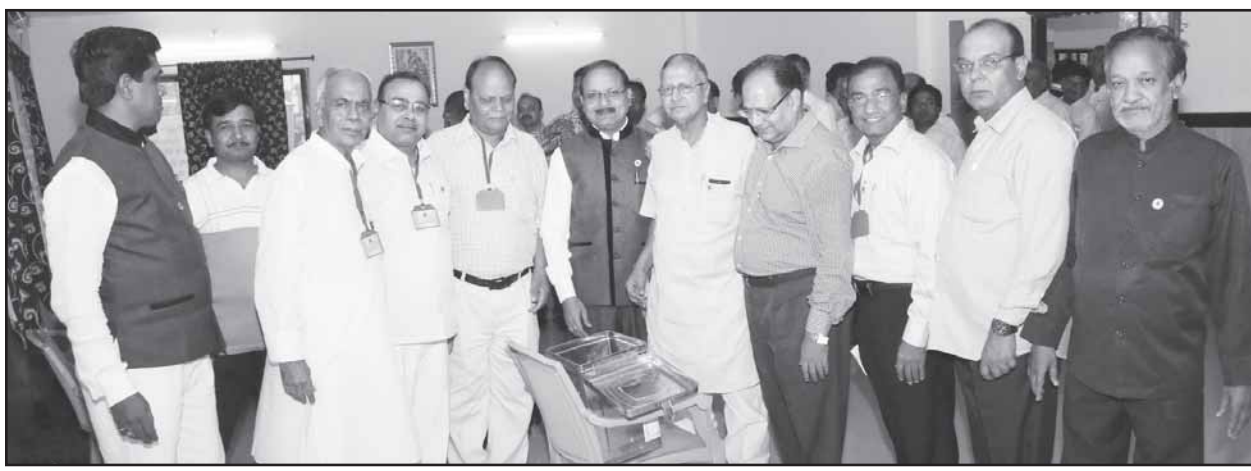

बैठक में उपस्थित पदाधिकारीगण।

सम्मेलन के कार्यक्रम

सम्मेलन के विभिन्न पहलुओं को मजबूती एवं गति प्रदान करने के उद्देश्य से पिछले वर्ष पूरे वर्ष के लिए एक कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की गई थी। इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए सभी प्रांतों में इसकी प्रतिलिपि भेजी गई थी। कार्यक्रम निम्नवत हैं :

गणतंत्र दिवस २६ जनवरी
डॉ. राम मनोहर लोहिया जन्म जयन्ती २३ मार्च
राजस्थान दिवस ३० मार्च
स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त
महात्मा गाँधी जन्म जयन्ती २ अक्टूबर
हरियाणा दिवस १ नवम्बर
जमनालाल बजाज जयन्ती ४ नवम्बर
सम्मेलन स्थापना दिवस २५ दिसम्बर
महाराणा प्रताप जन्म जयन्ती
होली प्रीति सम्मेलन
दीपावली प्रीति सम्मेलन

इसके अतिरिक्त प्रत्येक मास विशेष के लिये भी कुछ कार्यक्रम निर्धारित किये गये थे। आगामी दो मासों के कार्यक्रम हैं :

मई : संगठन-शाखा विस्तार – इसके तहत संगठन को मजबूत करने के सभी पहलुओं पर जोर दिया जाना चाहिए।

(क) सदस्यों की सूची तैयार करना। आवश्यक हो तो आगे की कार्यवाही के लिए जिला/प्रांत/राष्ट्रीय कार्यालय में भेजना।

(ख) लंबित/आवश्यक चुनाव सम्पन्न करना।

(ग) संभावनाओं को तलाशते हुए नये शाखा खोलने के कार्य को सम्पन्न करना।

(घ) सदस्य डायरेक्टरी प्रकाशित करना।

जून : सम्मेलन जनसंपर्क अभियान – इस दौरान समाज के बंधुओं एवं उनके द्वारा संचालित सामाजिक/व्यावसायिक/तकनीकी संस्थाओं में सम्मेलन के उद्देश्यों एवं संगठन का प्रचार करना। इस संबंध में सभा/गोष्ठी आयोजित करना। अन्य आयोजनों में जाकर उनकी अनुमति से सम्मेलन के बारे में समाज बंधुओं में प्रचार करना।

हर्ष का विषय यह है कि प्रांतों से इन कार्यक्रमों का स्वागत हुआ। किन्तु साथ ही साथ उसके कार्यान्वयन में और गति देने की आवश्यकता है। इस वर्ष फिर से सभी प्रांतो के इन कार्यक्रमों पर ध्यान देने का अनुरोध है। पूरा विवरण अलग से सभी प्रांतो को इस वर्ष भी भेजा जा चुका है। सभी प्रांतो से अनुरोध है कि इस दिशा में ठोस कदम उठायें, अपने सभी शाखाओं को सूचित करें। अपने कार्यक्रमों की सचित्र सूचना समाज विकास में प्रकाशन हेतु सदैव भेजने का कष्ट करें।

– **शिव कुमार लोहिया**, राष्ट्रीय महामंत्री

समाचार-सार

अशोक जालान बने लायन्स क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जालान को गत दिनों लायन्स क्लब के वार्षिक अधिवेशन में लायन्स डिस्ट्रिक्ट ३२२ सी-२ (पूरे पश्चिम ओडिशा क्षेत्र) का डिस्ट्रिक्ट गवर्नर निर्वाचित किया गया। श्री जालान गत ३३ वर्षों से लायन्स क्लब के सक्रिय सदस्य हैं।

श्री अशोक कुमार जालान समाजसेवा के कार्यों में लगातार सक्रिय रहे हैं। सम्बलपुर में पीलिया (जाँडिस) की महामारी के दौरान उन्होंने स्थानीय म्युनिसिपल कॉरपोरेशन को एक हजार डस्टबिन दान में दिए। हाल ही में उन्होंने अपने अशोक जालान फाउण्डेशन की ओर से विभिन्न सेवाकार्यों हेतु एक करोड़ रुपये की सहयोग राशि देने की घोषणा की।

श्री जालान उत्कल सम्मेलन की पत्रिका झलक के सम्पादक और मारवाड़ी शिक्षा विकास ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी भी हैं।

अशोक कुमार जालान

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

एसिड सर्वाइवर्स फाउन्डेशन इंडिया की दक्षिण भारत में ऑपरेशन की शुरुआत

एसिड सर्वाइवर्स फाउंडेशन इंडिया (एएसएफआई) ने चेन्नई में ३ मार्च २०१५ को आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में अपने दक्षिण भारत में आपरेशन की शुरूआत की। इस मौके पर वार अगेनस्ट द टेरर काज्ड ड्यू टू एसिड अटैक अभियान की शुरुआत हुई।

संवाददाता सम्मेलन में एएसएफआई के चैयरमैन डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, सदर्न चेप्टर प्रेसिडेंट श्रीमती मनीषा लोहिया एवं अन्य।

फाउंडेशन एसिड अटैक सर्वाइवर्स की मदद करता है उनके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालकर उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाता है। एएसएफआई के चैयरमैन डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि हमारा लक्ष्य सामाजिक, शैक्षणिक और नियामक प्रक्रियाओं के माध्यम से देश से एसिड हमले के मामलों को खत्म करना है। भारत में यह अपराध बढ़ रहा है। इसके लिए मानवाधिकार, लिंग समानता और महिला जागरण तथा सशक्तिकरण के लिए काम करना होगा।

इस मौके पर एएसएफआई सदर्न चेप्टर प्रेसिडेंट मनीषा लोहिया, नीना रेड्डी, शंकर नेत्रालय के संस्थापक डॉ. एस.एस. बद्रीनाथ, पृथ्वीराज तथा प्रज्ञा प्रसून सिंह उपस्थित थे। संस्था ने पहले ही दक्षिणी क्षेत्र में ६२ सर्वाइवर्स की पहचान की है। हालांकि यह आंकड़ा पूरे देश में एसिड सर्वाइवर्स का सिर्फ १२ प्रतिशत ही है। इसके लिए कई अन्य संस्थाओं से भी हाथ मिलाया गया है। सर्वाइवरों को निःशुल्क व कम खर्च पर इलाज, चिकित्सा खर्च के लिए बीमा, सामाजिक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, मुआवजा, देखभाल, पुनर्वास मुहैया कराया जाता है।

फाउंडेशन का चेन्नई चेप्टर गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर कम्यूनिटी आधारित कार्यक्रम शुरु करेगा जिससे कि जागरुकता पैदा कर ऐसे हमलों को रोका जा सके। सर्वाइवर्स को कानूनी सहायता मुहैया कराई जायेगी। इस मौके पर ट्रामा इन्फार्म्ड केयर किट की भी शुरुआत की गई।

(पृष्ठ ११ का शेष)

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया का संक्षिप्त परिचय

दिया एवं मंत्री, उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष पद पर रहे संप्रति सम्पति संरक्षण मंडल के सदस्य हैं।

- रांची चेंबर ऑफ़ कॉमर्स के उपाध्यक्ष रहे।
- फेडरेशन ऑफ़ झारखण्ड चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के कोषाध्यक्ष रहे।
- लायंस क्लब ऑफ़ राँची ग्रेटर के अध्यक्ष रहे।
- जगतगुरु शंकराचार्य श्रृंगेरी पीठ अभिनन्दन समारोह के मंत्री रहे।
- दक्षिण-पूर्वी रेलवे के जोनल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य रहे।
- लैडी हितकारनी समिति, लैडी, राजस्थान के संरक्षक हैं।
- रेडक्रॉस सोसाइटी के आजीवन सदस्य है।
- नागरमल मोदी सेवा सदन के कई वर्षो से कार्यकारणी सदस्य है।
- झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना से ही सक्रिय रहे एवं संविधान का प्रारूप बनाने में भी अहम भूमिका निभाई। पहले अधिवेशन की स्मारिका का संपादन भी किया। प्रमंडलीय उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष मुख्यालय एवं वरीय उपाध्यक्ष का दायित्व वहन किया।
- रांची की कई सामाजिक एवं व्यापारिक संगठनो के संविधान को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- अग्रवाल सभा ने वर्ष २०१३ में इनकी सामाजिक सेवाओ की सराहना करते हुए सभा का सर्वोच्च सम्मान **"श्री अग्रसेन सम्मान"** से सम्मानित किया।

इनकी शादी १९६४ में सुशीलाजी के साथ हुई। एक पुत्री, तीन पुत्रों, नाती, नातिनी, पौत्र, पौत्री से भरा इनका सुखद परिवार है।

जैन अल्पसंख्यक समाज के विभिन्न प्रस्तावों पर शीघ्र निर्णय लेंगे – मंत्री दिलीप कांबळे

'ऑल इंडिया जैन मायनोरीटी सेल' के प्रतिनिधिमंडल को दिया आश्वासन

जैन समाज को अल्पसंख्यक दर्जा मिलने से प्राप्त होनेवाली सुविधाओं संबंधी सुधार एवं जैन समाज हेतु विशेष रूप से योजना बनाने हेतु 'ऑल इंडिया जैन मायनोरीटी सेल' द्वारा दिये गये प्रस्तावों पर शीघ्र निर्णय लेंगे, ऐसा आश्वासन महाराष्ट्र के अल्पसंख्यक कार्य एवं समाजकल्याण विभाग के राज्यमंत्री श्री दिलीप कांबळे ने दिया।

महाराष्ट्र सरकार द्वारा समाजकल्याण मंत्री दिलीप कांबळे को अल्पसंख्यक कार्य के राज्यमंत्री की जिम्मेदारी प्रदान करने के पश्चात ऑल इंडिया जैन मायनोरीटी सेल के प्रतिनिधिमंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी के नेतृत्व में उनसे मुलाकात कर उन्हे ज्ञापन देने पर उन्होंने यह आश्वासन दिया।

बैठक के प्रारंभ में संस्था द्वारा मंत्री महोदय का सम्मान किया गया, उसके पश्चात केंद्र सरकार की योजनाओं के महाराष्ट्र में कार्यन्वयन में आनेवाली समस्याओं के बारे में चर्चा की गयी। इसमें विशेष रूप से व्यापारी एवं उद्मियों को अल्प ब्याज पर ३० लाख रूपये का ऋण मुहैया करानेवाली योजना के प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता पर बल दिया गया। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में जैन मंदिर, स्थानक आदि के जीर्णोद्धार हेतु योजना, पाठशाला हेतु योजना, समाज भवन, स्थानक, उपाश्रय विहार धाम निर्माण हेतु अनुदान योजना आदि जैन समाज हेतु विशेष योजनाओं के गठन की माँग की गयी।

महाराष्ट्र के अल्पसंख्यक कार्य राज्यमंत्री दिलीप कांबळे को जैन समाज हेतु विशेष योजनाओं का ज्ञापन देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी, संदीप भंडारी एवं जितेंद्र कावेडीया।

प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी के साथ राष्ट्रीय महामंत्री संदीप भंडारी, जिनेंद्र कावेडीया, विजेंद्र कर्नावट, गौरव शहा आदि ने सहभागी होकर अपने विचार रखे।

राजनीति के पंक में पंकज थे आचार्य विष्णुकांत शास्त्री

प्रतिष्ठित साहित्यकार, लोकप्रिय राजनेता तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की दसवीं पुण्यतिथि (१७ अप्रैल) के अवसर पर १९ अप्रैल २०१५ को श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कक्ष में एक भावपूर्ण आयोजन अनुष्ठित हुआ।

समारोह के मुख्य वक्ता आई. आई. टी. खड़गपुर के हिन्दी अधिकारी डा. राजीव रावत ने विष्णुकान्तजी के साहित्यिक कृतित्व के महत्त्वपूर्ण पक्षों को उद्घाटित किया। अपने व्याख्यान में आर्यसमाज कोलकाता के श्री योगेश राज उपाध्याय ने कहा कि आचार्य शास्त्री के निष्कलंक जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शास्त्रीजी राजनीति के पंक में पंकज थे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन किया पुस्तकालय की साहित्यमंत्री श्रीमती दुर्गा व्यास ने। अध्यक्षता पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने की। डॉ. त्रिपाठी ने आचार्य जी से जुड़े आत्मीय संस्मरण प्रस्तुत किए। डॉ. वसुमति डागा ने शास्त्रीजी की छात्र-वत्सलता का उल्लेख किया। समारोह में महानगर के विशिष्ट साहित्यकार, कवि, साहित्यप्रेमी तथा समाजसेवी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। ★★★

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की दसवीं पुण्यतिथि पर श्रीमती दुर्गा व्यास, श्री योगेश राज उपाध्याय, डॉ. राजीव रावत एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

सत्य का उद्‌घाटन यदि भगवाकरण है तो यह जरूरी है – मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक बदलाय की आवाज उठाने को भगवाकरण कहे जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यदि सत्य का उद्‌घाटन भगवाकरण है तो भगवाकरण होना चाहिये। संघ प्रमुख १ अप्रैल २०१५ को कोलकाता के कलामंदिर सभागार में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में आयोजित डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर जाने-माने शिक्षाविद् व शिक्षा बदाओ आंदोलन के प्रणेता श्री दीनानाथ बत्रा को २६वें हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान से नवाजा गया। कुमार सभा की ओर से श्री मोहन भागवत व वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने श्री दीनानाथ बत्रा को शाल, मानपत्र व एक लाख रुपये का चेक प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह को संबोधित करते हुए मोहन भागवत ने दीनानाथ बत्रा के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि वे भ्रमित लोगों के भ्रम दूर करने तथा कुटिल लोगों के षड़यंत्रों का पर्दाफाश कर उन्हें निरस्त करने का प्रशंसनीय काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्व की तमाम समस्याओं के निराकरण के लिये डॉ. हेडगेवार के विचारों का प्रसार जरूरी है।

श्री दीनानाथ बत्रा ने कहा कि शिक्षा प्रकाश के समान है जो मनुष्य के आंतरिक गुणो को प्रस्फुटित करता है। भारतीय शिक्षा पद्धति में व्यापक बदलाव पर जोर देते हुए श्री बत्रा ने शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिये कुछ सुझाव पेश किये। इनमे शिक्षा के लिये स्वायत आयोग बनाने, शिक्षा व्यवस्था का दायित्व प्रशासनिक अधिकारियों के बजाये शिक्षाविदों को सौंपे जाने, आई.ए.एस. की तर्ज पर आई.ए.एस. (इंडियन एजुकेशन सर्विस) गठित करने, समाजसेवा को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाने, शिक्षापद्धति में प्राचीन व आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का समन्वय करने, पाठ्यपुस्तकों का समाजीकरण, राष्ट्रीयकरण व आध्यात्मीकरण करने तथा भारतीय भाषाओं को तरजीह दिये जाने जैसे सुझाव शामिल थे।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत को संज्ञाशून्य कर दिया। आज प्रज्ञाशून्यता के बड़े खतरनाक नतीजे देखने को मिल रहे हैं। जीवनशैली, रहन-सहन, खान-पान सब कुछ बदल रहा है। भारत के लोग अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने के बजाय आत्महीनता की स्थिति से गुजर रहे हैं और अपनी मान्यताओं व परंपराओं के बजाय बाहर से लाई गई चीजों को अधिक तरजीह दे रहे हैं।

स्वागत-भाषण पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने दिया जबकि धन्यवाद-ज्ञापन पुस्तकालय के पूर्व अध्यक्ष व वरिष्ठ समाजसेवी श्री जुगल किशोर जैथलिया ने किया। समारोह का संचालन प्रसिद्ध रंगकर्मी विमल लाठ ने किया। समारोह में पुरस्कार चयन समिति के सदस्य सर्वश्री लक्ष्मी नारायण भाला, मोहन लाल पारीक, श्रीमती दुर्गा व्यास, महावीर बजाज सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में कृष्ण स्वरूप दीक्षित, अरुण प्रकाश मल्लावत, शलभ चतुर्वेदी, नारायण दास व्यास, रामगोपाल सूंधा, चंद्र कुमार जैन, भंवर लाल मूंधड़ा आदि ने सक्रिय भूमिका निभाई। कोलकाता एवं हावड़ा महानगर के साहित्य, समाज, कला एवं शिक्षाजगत से जुड़े लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

श्री दीननाथ बत्रा को डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान २०१५ का मानपत्र भेंट कर सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत। अन्य परिलक्षित हैं – डॉ. दुर्गा व्यास, सर्वश्री मोहनलाल पारिक, अजय नन्दी, लक्ष्मीनारायण भाला, प्रभात कुमार, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं विमल लाठ।

वैवाहिक कार्यक्रमों में मद्यपान

– शिव कुमार लोहिया
राष्ट्रीय महामंत्री

पिछले वर्ष सम्मेलन ने समाज सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत वैवाहिक कार्यक्रमों में मद्यपान के बढ़ते प्रचलन पर एक संगोष्ठी आयोजित की थी। इस संगोष्ठी में कलकता के प्रबुद्ध धर्माचार्यद्वय पंडित मालीराम जी शास्त्री एवं बालब्यास पं. श्रीकांत शर्मा ने अपने सारगर्भित विचार रखे थे। स्पष्ट रूप से उन्होंने हमें बताया था कि विवाह के समय हम अपने देवी-देवताओं एवं पितरों का आह्वान करते है। साथ ही साथ विवाह हमारे सोलह संस्कारों मे से एक महत्वपूर्ण संस्कार है। ऐसे आयोजनों में मद्यपान करना या करवाना धर्म, शास्त्र एवं समाज व्यवस्था के सर्वथा विरूद्ध है एवं उसके कुफल दूरगामी होते हैं।

ऐसी अवस्था का चरम उदाहरण अभी छत्तीसगढ़ में सामने आया है जब उर्मिला सोनवानी नामक एक युवा महिला ने फेरे के मध्य में दूल्हे को नशे में धूत्त पाया एवं उसने फेरे लेने से इंकार कर दिया। यह एक साहसिक कदम है एवं इस घटना से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री इतने प्रभावित हुए कि उन्होने छत्तीसगढ़ सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए उर्मिला को अपना ब्रांड एम्बासडर बनाने का एलान कर दिया। वास्तव में यह घटना एक साहसिक कदम तो है ही। साथ ही साथ यह हमें अपनी आँखे खोलने को बाध्य करती है। शंकराचार्य जी ने भी इस प्रकार के घटना की निंदा की है।

श्रीमद भागवत गीता में कहा गया है –

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।। (१६/२३)

अर्थात जो पुरुष शास्त्रविधि को त्याग कर अपनी इच्छानुसार मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता है, न परमगति को और न ही सुख को प्राप्त कर पाता है।

इस सचेतनता अभियान को प्रभावशाली बनाने के लिए हमें उदाहरण प्रस्तुत करने पड़ेंगे। इस संदर्भ में मैं सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोडिया द्वारा उठाये गये कदमों का उल्लेख करना चाहूँगा। पिछले दिनों अपने पौत्र के विवाह के अवसर पर उनके द्वारा आयोजित सभी वैवाहिक कार्यक्रमों में मद्यपान सर्वथा निषिद्ध था। आशा है इस प्रकार के और भी अनेक उदाहरण समाज में रहते है किन्तु सभी प्रकाश में नहीं आते। मैं डॉ. कानोड़िया को इस पहल के लिए साधुवाद देना चाहूँगा।

यह सर्वविदित है कि मद्यपान का हमारे मानसिक एवं शारिरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। जिस प्रकार मनुष्य पृथ्वी में अपना घर बनाकर निवास करता है, उसी प्रकार शरीर भी जीवात्मा का घर है। इस शरीर को सात्विक अन्न, पथ्य एवं संयम द्वारा स्वस्थ रखना हमारे लिये अति आवश्यक है। ऋग्वेद में भी कहा गया है –

दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम।
तव द्युक्षास इन्दवः।

यानि हमारा आहार ऐसा हो जिससे हमारी बुद्धि अवस्था और बल मे निरतंर बृद्धि होती रहे।

मनुष्य का लक्ष्य है अंधकार से प्रकाश की ओर यात्रा करना। हमें यह सोचना चाहिए कि मद्यपान के द्वारा क्या हमारी इस यात्रा में अवरोध नही आता है। पाश्चात्य देशों में जहाँ इस तरह की जिंदगी से निजात पाने के लिए वहाँ पर लोग हमारी संस्कृति अपना रहे हैं, हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं।

इस प्रकार के कार्यकलाप के विरुद्ध सम्मेलन समाज के सभी वर्गो को सचेतन होने का आह्वान करता है। विशेषकर युवा वर्ग को इसमें निहित स्वेच्छाचारी के विरुद्ध उठ खड़ा होना होगा।

सम्मेलन इस विषय में समाज में जागरूकता पैदा करने का काम कर रहा है। इस संवध में सभी सुझावों का स्वागत है ताकि हम इस दिशा मे और भी गति से आगे बढ़ सकें।

मुझे विश्वास है कि अनेकानेक प्रलोभनों एवं स्वेच्छाचारी प्रवृत्तिओं के बावजूद हमारा संस्कार एवं हमारी संस्कृति की ही अंतिम विजय होगी। इसी में समाज की भलाई है। ★★★

महाराणा प्रताप जयन्ती (२१ मई २०१५) पर विशेष

यशस्वी-अपराजित - महान प्रताप

– डॉ. ओंकार सिंह राठौड़

अमित पराक्रमी, दुर्धर्ष योद्धा, भगवान राम के वंशज, हिन्दुआ सूरज, आर्य कुल-कमल दिवाकर, महाराणा प्रताप को शत-शत प्रणाम! स्वतंत्रता के प्रहरी, मेदपाट यानी पृथ्वी के पाट मेवाड़ के सरदार, देश के प्रताप, हिन्दुओं के प्रताप, हिन्दुओं की आन-बान-शान के प्रताप, हिन्दुओं की चोटी और जनेऊ के रक्षक प्रताप! तुझे गये हुए चार सौ से अधिक वर्ष हो गये, पर हजारों वर्षों तक तेरा यश प्राची के सूरज की तरह अपनी किरणें फैलाता रहेगा।

यद्यपि है न प्रताप जग, तदपि प्रताप-प्रताप।
आर्यन हर्ष उछाह प्रद, यवनन को संताप।।

प्रातः स्मरणीय प्रताप! तेरा और तेरे पितामह मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन चरित्र एक-सा ही है, तभी तो तुम प्रातःस्मरणीय कहलाये। श्रीराम ने १४ वर्ष का वनवास भुगता और तुमने २८ वर्ष तक वन-वन घूमते हुए कष्ट भोगे, फिर भी अपना प्रण नहीं छोड़ा। दोनों पितृ-भक्त। उधर राम और भरत का मिलन होता है तो इधर प्रताप और शक्तिसिंह मिलन, उधर वीर हनुमान हैं तो इधर स्वामिभक्त पवनगामी चेतक, उधर दुख का साथी सुग्रीव है तो इधर देशभक्त भामाशाह, वहाँ वानर, ऋक्ष आदि जनजातियों की सेना तो इधर भील, मीणा वीरों की सेना। दोनों को अपनी मंझली माता के कहने से राजगद्दी से वंचित होना पड़ा। एक ओर राक्षसराज रावण था तो दूसरी ओर यवनराज अकबर और दोनों को ही हारना पड़ा।

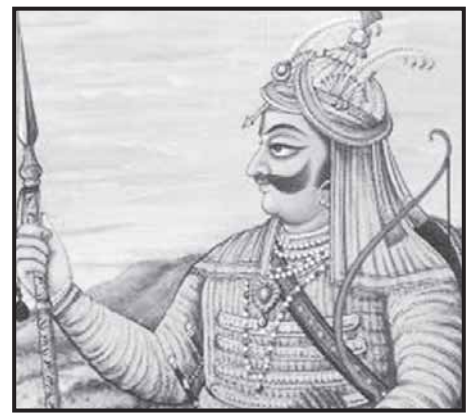

भगवान श्रीकृष्ण प्रथम 'रणछोड़' कहलाये। रणछोड़ यानी युद्ध से हट जाना व लम्बे समय तक लड़ाई जारी रखना। प्रताप भारत के द्वितीय 'रणछोड़' लाल हैं। भीम ने जरासंध का वध दोनों हाथों से उसके दो टुकड़े कर किया, पर वाह रे प्रताप! तूने तो एक हाथ के झटके से बहलोल खाँ व उसके घोड़े के दो टुकड़े कर दिये।

जरासन्ध बहलोल के वध में यह व्यतिरेक।
भीम कियो दो भुजन ते, पातल ने कर एक।।

तेरे पास वेतनभोगी सेना नहीं थी, पर मेवाड़ की जनता के सहारे तूने युद्ध से मुँह नहीं मोड़ा। क्या आकर्षण था तुझमें कि हर कौम तेरे पर प्राण न्यौछावर करने को तैयार रहती थी। भील तो तेरे हाथ-पैर, कान-आँख सभी कुछ थे। वे ही खाना खिलाते, वे ही युद्ध में लड़ते, वे ही परिवार की रक्षा करते। तभी तो मेवाड़ के राज्य-चिह्न में एक ओर राणा है और दूसरी ओर भिल्लू राणा, ऊपर सूर्य, बीच में चितौड़ दुर्ग, **'जो दृढ़ राखे धर्म को ताहि राखे करतार।'** प्रताप के सैनिक तो बख्तर-बन्द थे, पर भीलों ने तो नग्न देह पर भाले खाये।

इण नह बगतर बाँधिया, इण नह धरी कर ढाल।
नगन अखाड़े उतर कर, भील सहिया उर भाल।।

हिन्दुआना सूरज प्रताप! मेवाड़ का चप्पा-चप्पा तेरे घोड़े की पदचाप से महिमा-मण्डित है। जहाँ-जहाँ तू फिरा वे स्थान आज सारे भारत के तीर्थ-स्थल बन गये हैं। कुम्भलगढ़ का जन्म, चित्तौड़गड़ की पाठशाला, हल्दीघाटी का देवासुर संग्राम, दिवेर का अद्‌भुत रणरंग, गोगुन्दा का राजतिलक, मचीन्द की मोर्चेबन्दी, आवरगढ़ की होली, चूलिया में भामाशाह का सर्वस्व-अर्पण – ये सभी इतिहास के सुनहरे पन्ने बन गये हैं। चावण्ड को तो तूने मेवाड़ ही नहीं, सारे हिन्दुओं की राजधानी बना डाली।

पग-पग भम्या पहाड़, धरा छोड़ राख्यो धरम।
महाराणा मेवाड़ हिरदे बसिया हिन्द रे।।

मानवमूर्तियों के कुशल शिल्पकार प्रताप! तेरे पारस-स्पर्श से झाला मान, रामशाह तंवर, हकीम खाँ सूरी, राणा पुंजा, राठौड़ शंकरदास, झाला मानसिंह, भाण सोनगरा और भामाशाह भी खरा सोना बनकर अमर हो गये। **मातृभूमि के यशस्वी सपूत! आज भारत को तेरे जैसा यशस्वी, अपराजित योद्धा फिर चाहिये। तेरे ओज, शौर्य, त्याग, बलिदान, वीरव्रत और नायकत्व की आज फिर जरूरत आ पड़ी है।** हे भारतमाता –

माई एड़ा पूत जण, जेड़ा राण प्रताप।
अकबर सूतो औजके, जाण सिराणै साँप।। ★★★

प्रतापी प्रताप

– गणेश शंकर विद्यार्थी

".....महान पुरुष – निःसन्देह महान पुरुष! भारतीय इतिहास के किस रत्न में इतनी चमक है? स्वतन्त्रता के लिए किसने इतनी कठिन परीक्षा दी? जननी-जन्मभूमि के लिए किसने इतनी तपस्या की? देश-भक्त, लेकिन देश पर एहसान जमानेवाला नहीं; पूरा राजा, लेकिन स्वेच्छाचारी नहीं। उसकी उदारता और दृढ़ता का सिक्का शत्रुओं तक ने माना। शत्रु से मिले भाई शक्तिसिंह पर उसकी दृढ़ता का जादू चल गया। अकबर का दरबारी पृथ्वीराज उसकी कीर्ति गाता था। भील उसके इशारे के बन्दे थे। सरदार उस पर जान न्योछावर करते थे। भामाशाह ने उसके पैरों पर सब कुछ रख दिया। विभीषण मानसिंह उससे नजर नहीं मिला सकता था। अकबर उसका लोहा मानता था। खानखाना उसकी तारीफ में पद्य-रचना करना पुण्य कार्य समझता था। जानवर भी उसे प्यार करते थे और घोड़े चेतक ने उसके ऊपर अपनी जान न्योछावर कर दी। स्वतन्त्रता देवी को वह प्यारा था और वह उसे प्यारी थी। चित्तौड़ का वह दुलारा था और चित्तौड़ की भूमि उसे दुलारी थी। उदार इतना कि बेगमें पकड़ी गईं और मान सहित वापस भेज दी गईं। सेनापति फरीद काँ ने कसम खाई कि प्रताप के खून से मेरी तलवार नहायेगी, प्रताप ने सेनापति को पकड़ कर छोड़ दिया।"

प्रताप! हमारे देश का प्रताप! हमारी जाति का प्रताप! दृढ़ता और उदारता का प्रताप! तू नहीं है, केवल तेरा यश और कीर्ति है। जब तक यह देश है और जब तक संसार में दृढ़ता, उदारता, स्वतन्त्रता और तपस्या का आदर है, तब तक हम क्षुद्र प्राणी ही नहीं, सारा संसार तुझे आदर की दृष्टि से देखेगा। **संसार के किसी भी देश में तू होता, तो तेरी पूजा होती और तेरे नाम पर लोग अपने को न्योछावर करते। अमेरिका में होता, तो वाशिंगटन और अब्राहिम लिंकन से तेरी किसी तरह कम पूजा न होती। इंगलैण्ड में होता, तो वेलिंगटन और नेल्सन को तेरे सामने सिर झुकाना पड़ता। स्काटलैण्ड में वालेस और राबर्ट ब्रूस तेरे साथी होते। फ्रांस में जोन ऑफ आर्क तेरे टक्कर की गिनी जाती और इटली तुझे मेज़िनी के मुकाबले में रखती।** लेकिन हा! हम भारतीय निर्बल आत्माओं के पास है ही क्या, जिससे हम तेरी पूजा करें और तेरे नाम की पवित्रता का अनुभव करें? एक भारतीय युवक आँसू भरे हुए नेत्रों सहित अपने हृदय को दबाता हुआ लज्जा के साथ, तेरी कीर्ति गा–नहीं, रो–नहीं, कह भर लेने के सिवा और कर ही क्या सकता है?

महाराणा भारतीय चेतना के अविभाज्य अंग

– आचार्य विष्णुकांत शास्त्री

प्रताप भारतीय चेतना के अभिभाज्य अंग बन गये हैं। हम अपनी प्रसन्नता या व्यस्तता के क्षणों में भले उन्हें भूल जायें, संकट के समय वे हमें नहीं भूलते, प्रेरणा के अक्षयस्रोत बन कर हमारे राष्ट्रीय मनोबल में वे फौलाद ढालते रहे हैं और सदा ढालते रहेंगे।

सच तो यह है कि हमने अब भी प्रताप को पूरी तरह नहीं पहचाना है। महाराणा प्रताप का अर्थ है स्वाधीनता की रक्षा के लिए सब कुछ दाँव पर लगा देनेवाला त्यागमय शौर्य, तात्कालिक लाभ की सुविधावादी नीति को घृणापूर्वक ठुकरा देनेवाला नैतिकता-बोध, संकटों और पराजयों के बीच भी मेरुदण्ड को तना और माथे को ऊँचा रखनेवाला स्वाभिमान, स्वीकृत आदर्श की उपलब्धि के लिए सुख-दुःख, लाभ-हानि की परवाह किये बिना जीवन भर दृढ़ निश्चय वाला सतत प्रयास। इसीलिए देश और काल, जाति और धर्म की संकीर्ण सीमाओं को लाँघ कर प्रताप उन सबके हैं जो इन मूल्यों पर निष्ठा रखते हैं। ये मूल्य कभी पुराने नहीं पड़ते, अतः प्रताप भी पुराने नहीं पड़ सकते। प्रताप को भुलाना, इन मूल्यों को त्यागने के समान है और इन्हें त्यागनेवाला व्यक्ति या समाज सामयिक सुविधा या विलास-सुख के लिए अपनी अस्मिता को ही मिटाने की राह पर चलने के लिए अभिशप्त है। इसे जान कर हम चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं कि हम प्रताप को भूल जाना जाहते हैं या याद रखना चाहते हैं।

मृत्यु की साधना

इतिहास में राणा प्रताप ने मरण की साधना की थी। एक तरफ थी दिल्ली के महाप्रतापी सम्राट अकबर की महाशक्ति जिसके साथ वे भी थे जिन्हें उनके साथ होना था और वे भी जिन्हें प्रताप के साथ होना था। बुद्धि कहती थी टक्कर असम्भव है। गणित कहता था विजय असम्भव है। समझदार कहते थे – रुक जाओ। रिश्तेदार कहते थे – झुक जाओ। राणा प्रताप न बुद्धि की बात को गलत मानते थे, न गणित के विरोधी थे, न समझदारों का प्रतिवाद करते थे, न रिश्तेदारों को इन्कार। पर कहते क्या थे राणा प्रताप? कहते थे – **"जब मनुष्य की तरह सम्मान के साथ जीना असम्भव हो, तब हम मनुष्य की तरह सम्मान के साथ मर तो सकते हैं।"** बिना कहे ही शायद उनके मन में था कि मनुष्य की तरह सम्मान से मर कर – हम आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन का द्वार खुला छोड़ें, कुत्तों की तरह दुम हिलाकर जीते हुए उसे बन्द ना कर जायें।

('युगद्रष्टा भगत सिंह' ग्रन्थ से साभार)

महाराणा प्रताप

– श्यामनारायण पाण्डेय

(१)

सिंह के समान वीर
सूरमा प्रताप सिंह,
तेरी तरवार जब
मौत सी लहरकी।
तेरी आन बान देख
चेतक की शान देख,
मुगल समाज पर
राज पर लरकी।।
आह की कतार है कि
तलवार धार है कि
काल विकराल है कि
जीभ अजगर की।
हाहाकार, हाहाकार
हाहाकार मच गया
बच न सकेगी अब
जान अकबर की।।

(२)

चेतक की पीठ पर
सिंह को सवार देख
मुगल तैयारी करने
लगे कबर की।
करके चढ़ाई जब
तीर सी चढ़ाई भौंह
लोग कहते थे यह
भौंह है बबर की।।
नंगी तलवार देख
वार पर वार देख
मानसिंह कायर की
बायीं आँख फरकी।
भाग चलो, भाग चलो
आ गया प्रताप सिंह
जम न सकेगी अब
धाक अकबर की।।

(३)

हो गया पवन जब
राणा ने इशारा किया
शोर था उड़ा है आज
घोड़ा आसमान में।
शाह से कहो कि वह
अरब मदीना भगे
राणा की विजय अब
एक ही निशान में।।
कसम खुदा की वह
कहर मचाने चला
रह न सकेंगे अब
मुगल जहान में।
दिक सा बुखार सा
कयामत सा आता चढ़ा
भागो तलवार मियाँ
रख दो मियान में।।

महाराणा प्रताप

मेवाड़ी सपूत की हुंकार मेघ गर्जना सी,
अरि-रक्त पान का चहेता इक भाला था।
यामिनी में निद्राधीन चौंक-चौंक पड़े अरि,
निद्रा भंग होती राणा सिंह विकराला था।
चेतक की टाप सुन अरि के नयन झरे,
चण्डी को पिलाता अरि शोणित का प्याला था।
स्वाभिमानी झुका नहीं टूटन सही हो भले,
राणा परताप मां भारत का उजाला था।।१।।

युद्धरत शत्रु दल में महाभट यों लगे,
मिमियाते मेमनों में नाहर दहाड़ता।
रणभूमि पाट डाली अरिमुण्ड काट-काट,
विद्युत गति से भाला बैरियों को फाड़ता।
इतिहास बन गया आन, बान, शान युक्त,
आगे बढ़ा महाकाल अरि को पछाड़ता।
'हिन्दवाणी सूरज' ने कण-कण चमकाया,
'रूप' नजरों में हिमगिरी सा पहाड़ था।।२।।

– रूपचन्द 'रूप'
मनोहर थाना, झालावाड़

हळदीघाटी !

– कन्हैयालाल सेठिया

कोनी कोरो नांव
रेत रो हळदीघाटी,
अठै उग्यो इतिहास
पुजीजै इण री माटी।

कण-कण घण अणमोल
रगत स्यूं अंतस भीज्यो,
नहीं निछतरी भोम
गिगन रो हियो पतीज्यो।

गूंजी चेतक टाप
जुद्ध रा ढोल घुरीज्या,
पड़ी ना'र री थाप
जुलम रा पग डफळीज्या,

राच्यो रण घमसाण
बाण स्यूं भाण ढकीज्यो,
लसकर लोही इयाण
अथग खांडो खड़कीज्यो,

मूंघी मोळी राड़
स्याळ स्यूं सिंग अपड़ीज्यो,
दब्यो दरप रो सरप
सांतरो फण चिगदीज्यो,

नहीं तेल नारेळ
भटां रा मूंड चढीज्या,
धड़ लड़ धोयो कळख
जबर दुसमण रळकीज्या,

दीन्ही गोडी टेक
अठै आयोड़ी हूणी,
माथै लगा बभूत
पूत, जामण री धूणी,

थिरचक डांडी साच
पालड़ै तिरथ तुलीजै।
इण री चिमठी धूल
बापड़ो सुरग मुळीजै।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

2 Yrs. **PGDM** ₹ 1,00,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

2 Yrs. **#MBA + PGDM** ₹ 1,70,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

3 Yrs. **#BBA** ₹ 75,000

2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000

3 Yrs. **#BCA** ₹ 75,000

2 Yrs. **MBA (Hospital Mgmnt.)** ₹ 95,000

DUAL SPECIALISATION AVAILABLE

ELIGIBILITY & SELECTION
FOR MBA/PGDM

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE WITH 50% SCORE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW • APTITUDE TEST
- APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

Assistance for placement

- Eminent Faculty • Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes • Hostel
- AC Classrooms • P G Accommodation

Complimentary Courses

- Spoken English • Foreign Languages • Bengali & Sanskrit
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development • Theology

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Retail Management
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit, Bengali and Hindi
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course on Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Vocational & Technical Training
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance
- Certificate course on theology

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : (033) 2290 0338

रवीन्द्र जयंती (९ मई) पर विशेष

अप्रतिम रवीन्द्रनाथ ठाकुर

– शिव कुमार लोहिया

श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर बंगाल के सफल जमींदारों में से एक थे। इस परिवार ने कई लेखक एवं संत समाज को दिये। परिवार की शिक्षा एवं संस्कृति में विशेष रुचि थी। साथ ही साथ रूढ़िवाद एवं कुप्रथाओं को समाप्त करने के उद्देश्य से श्री ठाकुर ने ब्राह्म समाज नामक संस्था की स्थापना की थी। ऐसे परिवार में श्री रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म ७ मई १८६१ को हुआ था।

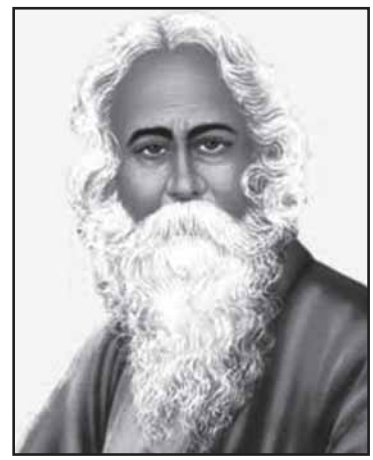

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सन् १८७७ में इंगलैंड जाकर शिक्षा प्राप्त की। पर कोई उपाधि प्राप्त नहीं कर सके। स्वदेश लौटने पर उन्होंने साहित्य सेवा प्रारम्भ कर दी। सन् १९०२ में पत्नी के स्वर्गवास के बाद वियोग में कुछ कविताएँ उन्होंने लिखी। उनकी रचनाएँ यूरोप की पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होने लगीं। सन् १९१२ में जब वे अपना इलाज करवाने इंगलैंड गए तो वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। उन्होंने अपनी रचनाओंका अंग्रेजी अनुवाद कर प्रकाशन करवाया। सन् १९१३ में गीतांजलि पर उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलने पर उनकी ख्याति पूरे विश्व साहित्यिक जगत में फैल गई। सन् १९१४ में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सर की उपाधि प्रदान की थी, जिसे उन्होंने सन् १९१९ जालियावाला बाग में हुए गोलीकांड के विरोध में वापिस लौटा दिया।

शांतिनिकेतन में रवीन्द्रनाथ एक शिक्षा का वैश्विक क्रेन्द्र खोलना चाहते थे जो कि विश्व के भौगोलिक बंधन से उपर उठकर भारत को पूरे विश्व के साथ जोड़ सके। २४ दिसम्बर १९१८ को विश्वभारती का शिलान्यास हुआ एवं तीन वर्षों बाद इसका उद्घाटन किया गया। भावनात्मक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास का लक्ष्य लेकर गुरु शिष्य परम्परा के तहत पेड़ों के नीचे कक्षा प्रारम्भ किया। नोबेल पुरस्कार की पूरी राशि उन्होंने विश्व भारती को प्रदान कर दी। सन् १९१९ में जन-गण-मन गान की रचना की, जोकि स्वतंत्रता प्राप्ति बाद राष्ट्रगान के रूप में स्वीकृत हुई। पूरे यूरोप, उत्तरी अमेरिका एवं पूर्वी एशिया में उनकी ख्याति फैल गई। सभी प्रमुख भाषाओं में उनके रचनाओं का अनुवाद हुआ है। विश्व के अनेकानेक ख्यातिनाम एवं अन्य साहित्यकों, रचनाकारों को उन्होंने अपनी रचना एवं विचारों से प्रभावित किया।

रवीन्द्रनाथ की रचनाओं में ताजगी भरा एहसास समाहित है। अनुपम भावधारा, गहरी आध्यात्मिक पैठ एवं शिशु जैसी सहजता के साथ प्रकृति की नैसर्गिक गुणों की गंध लिये उनकी रचनाएँ पाठक के दिलो-दिमाग पर अभिनव प्रभाव करती है। पूर्ण समर्पण एवं नये सोच को अनूठे अंदाज में बयान करतीं उनकी रचनाएँ भाषा एवं संगीत-विन्यास के नये प्रतिमान स्थापित करती हैं। उनकी रचनाओं के अभिनवता की बानगी कुछ इस प्रकार है।

एक कविता में वे कहते हैं मंदिर में भगवान के चरणों में फूल अर्पित करने के पहले अपने घर को प्यार की सुरभि से भर दो। भगवान की बेदी पर मोमबत्ती जलाने के बजाय अपने हृदय के अंधकार को मिटाओ। मंदिर में प्रार्थना में अपने शीश झुकाने से पहले अपने साथियों के सामने नम्रता के साथ झुककर रहना सीखो। मंदिर में घुटने टेकने के बजाय किसी गिरे हुए गरीब को झुककर उठाओ। अपने पापों के लिये क्षमा मांगने से पहले उन्हें क्षमा करो, जिन्होंने तुम्हारा दिल दुखाया है। एक अन्य रचना में वे कहते हैं कि हे प्रभु! मैं तुमसे यह प्रार्थना नहीं करता कि विपत्ति से मेरी रक्षा करो, प्रभु मेरी प्रार्थना है कि मुझे इतना दृढ़ बनाओ ताकि विपत्ति से मैं भयभीत नहीं होऊँ।

महात्मा गाँधी ने उन्हें गुरुदेव की उपाधि दी थी, जिसे सभी ने अपनाया। गाँधी जी की प्रार्थना सभा में सदैव गुरुदेव की रचना 'यदि तोर डाक सुने केउ ना आसे, तबे एकला चलो रे' का गान होता था। यह एक प्रेरणादायक रचना है। जिसमें कहा गया है कि यदि तुम्हारी पुकार पर कोई न आये तो अकेले ही चलो। यदि सब डर कर अपना मुख मोड़ ले तो तुम मुक्तकंठ से भयरहित अपनी बात अकेले ही कहो। यदि सब लौट जाय एवं गहरी रात में कोई ध्यान न दे तो पथ के कांटो से लहूलुहान चरण से अकेले ही चलो। एक अन्य रचना जिसकी भावनाएँ मन की आंतरिक गहराईयों को छूते हुए मानव को अभिभूत कर देती हैं, इस प्रकार है :

मन जहाँ डर से परे है / और सिर जहाँ ऊँचा है / ज्ञान जहाँ मुक्त है / और दुनियों को संकीर्ण घरेलू दीवारों सै / छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटा नहीं गया है / जहाँ शब्द सच की गहराइयों से निकलते है / जहाँ थकी हुई प्रयासरत बाँहें, त्रुटि हीनता की तलास में है / जहाँ कारण की स्पष्ट धारा है / जो सुनसान रेतीले से मृत आदत कै / वीराने में अपना रास्ता खो नहीं चुकी है / जहाँ मन हमेशा व्यापक होते विचार और सक्रियता मैं / तुम्हारे जरिये आगे चलता है / और आजादी के स्वर्ग में पहुँच जाता है / ओ पिता / मेरे देश को जागृत बनाओ।

मानवता के इस महानायक को शत्-शत् प्रणाम ! ★ ★ ★

मैं अगर रुक गया काफिला तो चले

– भानीराम सुरेका

सामाजिक क्षेत्र में इन दिनों गहरी मायूसी छाई है। जो लोग समाज और सामाजिकता से लगाव रखते हैं और यह तमन्ना रखते हैं कि समाज का स्वरूप बेहतर हो और लोगों में सामाजिक कर्तव्यों के प्रति दिलचस्पी हो, वे कहीं न कहीं भीतर तक टूटे नज़र आ रहे हैं। सामाजिक अंकुश के अभाव में जिस तरह लोग बेपरवाह हो गए हैं उससे सामाजिक क्षेत्र के बेलगाम होने का खतरा बढ़ गया है और जब समाज बेलगाम हो जाय, लोग बेपरवाह हो जाएँ तो एक खतरा यह रहता है कि समाज कहीं अपनी अस्मिता को ही न खत्म कर ले। समाज एक पहचान है और सामाजिकता उसकी सोच की दिशा।

जिन समाजों ने राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज में अपनी विशिष्ठ पहचान कायम की उनके मूल में उनकी सोच रही। मैं जिस समाज से ताल्लुक रखता हूँ यानि मारवाड़ी समाज से, उसकी पहचान के मूल में लोगों की उद्यमिता की उद्दाम इच्छाशक्ति एवं सामाजिकता की प्रगाढ़ भावना रही है। इतिहास गवाह है कि इस समाज के लोगों ने पत्थर पर घास उगाये, बंजर में फसल पैदा किये, रेत में पानी की तलाश की, खिज़ां में बहार की रौनक जगाई। बेहतर जिंदगी की तलाश में दिसावर को लोटा, कम्बल की संपति के साथ निकले मारवाड़ियों ने पाई-पाई जोड़कर सुकून की जिंदगी का फलसफा दिया। सिर्फ बड़े शहरों में ही नहीं, देश के कोने-कोने में छोटे-छोटे गाँवों तक जाकर मारवाड़ियों ने व्यापार-बाणिज्य की शुरुआत की। अकेला चलो की नीति में इस समाज का कभी विश्वास नहीं रहा। जहाँ भी गए, वहाँ की उन्नति में अपना सम्पूर्ण योगदान दिया। इसीलिए इन्हें विरोध का सामना कम करना पड़ा। स्थानीय समाजों के साथ समरस होकर अपने व्यवसाय का विकास तथा साथ-साथ उनकी बेहतरी के लिए अपनी आय का एक हिस्सा स्वेच्छा से दान देने की प्रवृति ने इस समाज को सम्मान का अधिकारी बनाया।

मारवाड़ियों ने अपनी संस्कृति का कभी त्याग नहीं किया बल्कि जहाँ भी ये बसे वहाँ की संस्कृति के साथ अपनी संस्कृति को आत्मसात कर लिया और एक साझा संस्कृति का बाना तैयार किया। सोच में लचीलापन एवं कार्य में सामूहिकता की भावना ने इस समाज की प्रगति का पथ प्रशस्त किया। यह सब करते हुए भी मारवाड़ी कभी अपनी मातृभूमि को नहीं भूले। बहुत से मारवाड़ियों ने कर्मभूमि के साथ मातृभूमि में भी समानांतर सामाजिक कार्य किया। एक समय शिक्षा को अधिक महत्व नहीं देनेवाले इस समाज ने बंगाल में हुए नवजागरण से प्रभावित होकर कई क्रांतिकारी कदम उठाये जिनमें सदियों से चले आ रहे सामाजिक विकृतियों की रोकथाम एवं शिक्षा के माध्यम से समाज को आधुनिक सोच से संचालित करना मुख्य था। इसी दिशा में पहल करते हुए समाज के लोगों ने जगह-जगह स्कूल, कॉलेज बनवाए, चिकित्सा के लिए दातव्य चिकित्सालयों की स्थापना की, अस्पताल खुलवाये, सरकार द्वारा उपेक्षित क्षेत्रों में सामाजिक कार्यों के माध्यम से बेहतर जनजीवन का बीजारोपण किया।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि राजस्थान, हरियाणा, मालवा के बाद सर्वाधिक मारवाड़ी कोलकाता और इससे संलग्न इलाकों में आकर बसे। ब्रिटिश शासन के दरम्यान चूँकि बंगाल औद्योगिक रूप से समृद्ध था इसीलिए यहाँ व्यापार-बाणिज्य के साथ-साथ स्थानीय बंगाली समाज की प्रगतिशील सोच का पूरा प्रभाव मारवाड़ी समाज पर पड़ा। यहीं से मारवाड़ी समाज के पुरोधाओं ने समाज सुधार की प्रक्रिया शुरू की और कालान्तर में हम जैसे लोग उस मुहीम के हिस्सा बन गए। समाज सुधार या सामाजिकता की भावना के पीछे कहीं भी हमारा उद्देश्य धनार्जन नहीं था बल्कि स्वयं द्वारा अर्जित धन का सामाजिक उपयोग करने की प्रवणता थी।

लेकिन १९८० के दशक के बाद से और विशेषकर उदारवादी अर्थनीति के चलन के बाद से जबसे भारत में विदेशी टीवी चैनलों का प्रसारण शुरू हुआ और वहाँ की सरकारों ने भारत को बड़ा बाज़ार समझकर यहाँ अपने उत्पादों के साथ कुसंस्कृतियों का निर्यात शुरू किया तबसे सामाजिक क्षेत्र में पतन का दौर शुरू हुआ और लोग सामाजिक बनने की बजाय स्वकेंद्रित बनने लगे। संयुक्त परिवार को ख़त्म करके एकल परिवार की अवधारणा बलबती हुई जिसमें दूसरों, यहाँ तक कि सहोदरों तक के लिए कोई गुंजाइश नहीं रही। वृद्ध माँ-बाप को बेकार की वस्तु मानकर घर से अलग कर दिया गया। रिश्ते कुछेक अवसरों पर औपचारिक मिलन का प्रतीक बन गए। पुराने स्थापत्यों को बदलकर उन्हें कमाई के अनुरूप आधुनिक बनाने पर जोर दिया गया जबकि कभी सामाजिक कल्याण के लिए ऐसे बहुत से स्थापत्य निःस्वार्थ भाव से बनाए गए थे। इस तरह पूरी व्यवस्था अर्थकेन्द्रित होती गई जिसमें सामाजिकता का स्थान हासिये पर चला गया।

जिस जोशो-खरोश के साथ हम सामाजिक क्षेत्र में आये थे और जिस उमंग से हमने सामाजिक कुरीतियों और कुप्रथाओं के खिलाफ लड़ाई का आगाज़ किया था, आज जब उन्हीं बुराइयों और कुरीतियों को बढ़-चढ़कर समाज में सम्मानित होते देखता हूँ तो कलेजे पर सांप लोट जाता है। लगता है कि या तो हम चूक गए या समाज ने हमें स्वीकार नहीं किया। यह सोचने की जरुरत आन पड़ी है कि आखिर सामाजिक क्षेत्र में ऐसी दुरावस्था के क्या कारण रहे हैं और उन्हें दूर करने में हम क्यों विफल रहे हैं।

भारतीय समाज अपनी परंपराओं और रिवाजों से बंधा समाज है। शासन चाहे स्वदेशी हो या विदेशी यहाँ के लोग अधिक परिवर्तित नहीं हुए। लड़ाई के केंद्र में वे लोग रहे जिन्हें सता और सुविधा से अधिक लगाव रहा। यहाँ के शासकों ने भी कभी जनमानस की कद्र नहीं की। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत यहाँ हमेशा से चरितार्थ होती रही है। सामाजिक क्षेत्र में भी वही हुआ है। जबसे सामाजिक क्षेत्र में ऐसे लोगों का प्रवेश शुरू हुआ जिनकी पृष्ठभूमि आपराधिक थी या जिनकी सोच में समाज की कीमत पर कमाई का साधन तलाशना था, तबसे सामाजिक क्षेत्र कलुषित होता गया है। समाज को धन के बल से संचालित करने की मंशा रखने वालों ने सामाजिकता को धन प्रदर्शन का जरिया बना दिया है। यहाँ सिर्फ वही पूजा जाता है जिसके पास लुटाने के लिए धन है। तन और मन की सामाजिक क्षेत्र में कोई कद्र नहीं है। इसीलिए आज सामाजिक संस्थाएँ तो हज़ारों हैं पर सामाजिक कार्यकर्ता ढूँढे नहीं मिलते क्योंकि उनके पास तन और मन के सिवा कुछ है ही नहीं। धनवानों की भीड़ में वे मूक दर्शक होने से अधिक की हैसियत नहीं रखते। बहुत सी ऐसी संस्थाएँ भी हैं जिनके पास धन है पर कार्यकर्ताओं की कमी के चलते उनकी परियोजनाएँ रुकी पड़ी हैं। समाज के लिए किसी के पास वक्त नहीं है।

आज भी मारवाड़ी समाज द्वारा स्कूल, कॉलेज खोले जा रहे हैं, अस्पताल बनाए जा रहे हैं मगर अपवादों को छोड़कर इनकी चौखट पर पैर रखने की इजाज़त सिर्फ उन्हीं को है जिनके पास मोटी रकम की व्यवस्था है। दान पर चलने वाले पुराने स्कूल, कॉलेज, अस्पताल जीर्णशीर्ण अवस्था में हैं पर उनकी फ़िक्र किसी को नहीं है।

मेरी समझ में यह मारवाड़ी समाज के भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। जिन सिद्धांतों पर चलकर इस समाज ने पूरे देश में अपनी गरिमापूर्ण पहचान बनाई उन्हें त्यागकर इस समाज की शाख बच नहीं सकती। धर्म के नाम पर आडंबर को बढ़ावा देकर, भक्ति को फ़िल्मी कलेवर से प्रदूषित कर कोई भी समाज लम्बे समय तक अपनी गरिमा अक्षुण्ण नहीं रख सकता। आज देश में कटुता फ़ैल रही है, राजनीतिक संकीर्णता ने सबको अँधा कर दिया है। लोग छोटी-छोटी बातों को तूल देकर आपस में लड़-मर रहे हैं। ऐसे में आपसी एकता और सामूहिक सोच की जरूरत पहले से ज्यादा है।

आज जरूरत इस बात की है कि पुराने सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपेक्षित सम्मान देकर सामाजिकता की अवरुद्ध धारा को स्वतः प्रवाह का अवसर प्रदान किया जाए जिससे नयी पीढी प्रेरित हो और समाज की पहचान अन्य समाजों के समक्ष सम्मानजनक हो। यदि ऐसा नहीं हुआ तो जल्दी ही नयी पीढी सामाजिकता को पाश्चात्य रंग में रंगकर उसकी उपादेयता को ही समाप्त कर देगी।

(लेखक सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री हैं।)

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे"

– सन्त कुमार कसेरा

गोस्वामी तुलसीदास जी की यह वाणी इस युग में तो बहुत ही सत्य प्रतीत होती है। सन्त श्री गोस्वामी तुलसीदास भविष्यद्रष्टा थे। प्राचीन काल में गुरु प्राप्त करने के लिये बड़े-बड़े राजा-महाराजा साधु-सन्त तरसते थे। उनका द्रवित हृदय बार-बार यही पुकारता था "बिन गुरु ज्ञान कहाँ ते पाऊँ"। किन्तु आज पथ-पथ में, दूरदर्शन में गुरु मिलते हैं। उनके पास उपदेशों की कोई कमी नहीं है। हर व्यक्ति के लिये पृथक-पृथक उपदेश होते हैं उनके पास। सबसे बड़ी बात तो यह है – वर्तमान समय में, गुरु और उनके उपदेश अति सुलभ हो गये हैं।

जितना धन खर्च करो उतने ही बड़े गुरु और उपदेश बहुत सरलता से मिल जाते हैं। निर्धन को तो धन भी खर्च नहीं करना पड़ता। उसे तो पग-पग पर लोग उपदेश देते ही रहते हैं। ये उपदेश लोग कितना अपने जीवन में उतारते हैं कि एक सोचने का विषय है।

बचपन में मैंने एक कथा पढ़ी थी, जिसमें गुरु अपने शिष्य पर साधारण सी किसी बात पर क्रोधित हो जाता है। तब शिष्य ने डरते-डरते गुरु से बहुत ही नम्र शब्दों में पूछा - गुरु जी क्या क्रोध करना आपके लिये वर्जित नहीं है? उसी क्षण गुरु के हृदय में यह बात घर कर गयी और उन्होंने पहले अपने क्रोध को वश किया, फिर अपने शिष्यों को उपदेश देने का साहस किया।

हमारा मारवाड़ी सम्मेलन भी पूँजीपतियों और विद्वानों से परिपूर्ण है। समय-समय पर समाज में आये आडम्बरों को दूर करने के प्रयत्न में बड़ी-बड़ी नियमावली बनाई जाती है। मेरे मन में फिर एक प्रश्न उठता है, क्या सम्मेलन के पदाधिकारी एवं प्रमुख उन नियमों का पालन करते हैं? उपदेश देनेवाले का प्रभाव तभी होता है, जब स्वयं उन उपदेशों का पालन करता है वो। स्वार्थ के वशीभूत होकर दिये हुये उपदेशों का जन-जीवन पर कोई प्रभाव नहीं होता। नियमों के साथ भी यही लागू होता है। नियम बनाने वाले अगर उनका पालन न करें तो उनको समाज से भी कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिये। क्या नियम समाज के साधारण परिवारों के लिये ही हैं? ये नियम क्या पदाधिकारियों के लिये नहीं होते? मुझे आश्चर्य होता है कि पूर्ण दृष्टि होते हुये भी लोग सूरदास बन जाते हैं। मैं सम्मेलन से नम्र निवेदन करता हूँ कि समाज में क्रान्ति लायें। क्रान्ति तभी सम्भव है जब सभी सर्वसाधारण सदस्यों को सम्मेलन की मुख्य धारा में बारी-बारी से सम्मिलित किया जाये। समाज विकास सम्मेलन की ऐसी पजिका है जो क्रान्ति ला सकती है। अगर इसका उपयोग समाज के विकास के लिये किया जाय, न कि प्रतिष्ठित उद्योगपतियों और सम्मेलन के पदाधिकारियों के चित्र छापने एवं राजनीतिक विषयों के उल्लेख किये जायें।

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहीं ते नर न घनेरे।"

हनुमान जयन्ती (४ अप्रैल २०१५)

हनुमान स्तवन

– पं. ताउ शेखावटी

शुभं सुन्दरं वज्रदेहं विशालं विभुं अंजनीलालरुद्रावतारम्
बलिष्ठं वरिष्ठं कपीशं कृपालु प्रभुं जानकीनाथदासं नमामि

अत्यन्त शुभकारी, परम सुन्दर, वज्र के समान विशाल देह वाले, ऐश्वर्यमान, माता अंजनी के लाड़ले, रुद्रावतार, महाबली, वरिष्ठ, कपीश, कृपालु, जानकीनाथ भगवान श्रीराम के परम भक्त मेरे प्रभु हनुमानजी महाराज को मैं नमन करता हूँ।

(त्रोटक छंद)

रट री रसना अविराम सदा। बजरंग बली हनुमान सदा।।
सिव रूप अनूप सदा बिमलं। भज अंजनि पुत्र बरं अमलं।।
तनु सुन्दर लाल बिसाल हरी। सिर छत्र ध्वजा गल माल परी।।
कर भूधर बज्र महान सजे। दिन राम सदा सिय राम भजे।।
सुधि लाए समुन्दर लाँघि सिया। जननी जग श्री रघुनाथ प्रिया।।
कपि चंचल चातुर ग्यान धुरी। खल नासक दाहक लंक पुरी।।
समरांगन 'लक्ष्मन' भूमि परे। झट लाइ सँजीवनि सोक हरे।।
रनधीर बिनासक सत्रु दलं। अहिरावन काल कपीस बलं।।
बजरंग बली नित नाम भजे। सब भूत पिसाच कराल 'भजे'।।
कपि संकट मोचन सिद्ध जती। बल बुद्धि निधान हरे कुमती।।
हनुमंत सहायक हों जिन्हकें। जग कौन बिगार करे तिन्हकें।।
गुन सागर सागर ग्यान गुनी। नित सेवत संत सुजान मुनी।।
सुत मारुति केसरि नंदन जै। प्रिय मातु सिया रघुनंदन जै।।
कह 'ताउ' कृपा कपिनाथ करो। भव बंधन पातक ताप हरो।।

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

आगामी कार्यक्रम

प्रांतीय अधिवेशन

४-५ जुलाई २०१५ को हरमू रोड, राँची स्थित मारवाड़ी भवन में।

प्रमंडलीय अधिवेशन

- पलामू प्रमंडल का प्रमंडलीय अधिवेशन १७ मई २०१५ को डाल्टेनगंज में।
- हजारीबाग प्रमंडल का प्रमंडलीय अधिवेशन १५ जून २०१५ को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार की उपस्थिति में।

समाचार-सार

हेरिटेज बिजनेस स्कूल द्वारा आयोजित 'एजुकेशनल एंड कल्चरल कोऑपरेशन अमंग सार्क कंट्रीज' विषयक कॉनक्लेव के उद्घाटन सत्र में पश्चिमबंग के महामहिम राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को सम्मानित करते पैटन ग्रुप एवं हेरिटेज बिजनेस स्कूल के चेयरमैन श्री हरि प्रसाद बुधिया; साथ में परिलक्षित हैं मंत्री श्री पार्थ चटर्जी, उच्च शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार एवं अन्य।

Shaping

a greener tomorrow

Accountability to the future generation

S. R. RUNGTA GROUP

Cares for the land and its people

MINING, STEEL & POWER

Rungta House, Chaibasa, Jharkhand - 833201

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2013-2015
Date of Publication - 28th April 2015
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
(2nd Floor) Kolkata - 700 007
Telefax : (033) 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com